Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.177, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.49366, NOV-DEC 2017, VOL- 4/37

गांधी दर्शन एवं पाश्चात्य प्रभाव

कैलाशनाथ गुप्ता, Ph. D.

एसो0. प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष बी0 एड्0, एस0 जी0 पी0 जी0 कालेज, मालटारी, आज़मगढ़

Abstract

इस शोध पत्र का निश्कर्श निकालते हुए यह कहना उचित प्रतीत हो रहा है कि गांधी जी के विचार किसी एक लेखक अथवा दार्शनिक से ग्रहण किये हुए नहीं थे चाहे गांधी जी पर उनका कितना ही प्रभाव क्यों न दिखाई दे। वास्तव में, गाँधी जी ने विभिन्न स्रोतों से विचार ग्रहण कर उन्हें अपने विचारों के अनुरूप ढाल लिया। अपने विचारों और सिद्धान्तों को स्पश्ट करने तथा अपनी धारणाओं को लोगों तक पहुँचाने के लिए गांधी जी ने न केवल विभिन्न धार्मिक पुस्तकों का ही नहीं अपितु टॉलस्टाय, थोरू, एमर्सन तथा रस्किन जैसे पाश्चात्य दार्शनिकों की रचनाओं का भी प्रभावशाली उपयोग किया।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

महात्मा गाँधी का चिन्तन शुद्ध भारतीय विचारों पर आधारित भारतीय चिन्तन है। किन्तु यदि उनके सम्पूर्ण वाड्मय का अध्ययन किया जाय तो यह भी स्पश्ट होता है कि उनके चिन्तन पर पाश्चात्य दर्शन का भी स्पश्ट प्रभाव है। अपने इंग्लैण्ड प्रवास के दौरान गाँधी जी पाश्चात्य चिन्तन के प्रत्यक्ष प्रभाव में आये। प्रस्तुत शोध पत्र में यह दर्शाने का प्रयास किया गया है कि गाँधी जी भारतीयता के साथ पाश्चात्य विचारों से भी प्रेरित थे और उन पाश्चात्य विचारों को भारतीयता के अनुरूप ढालने का प्रयास किया।

ईसाई धर्म छोड़कर अन्य सभी धर्मों के प्रति गाँधी जी का दृश्टिकोण सहिश्णुता का था। जब उन्होंनों जोसिया ओल्डफील्ड की सलाह पर बाइबिल का अध्ययन किया तो उनका विचार ईसाई धर्म के प्रति परिवर्तित हो गया। वे 'सर्मन ऑन दी माउन्ट' से अत्यधिक भावुक हो गये और ऐसा अनुभव किया कि उनके अपने धार्मिक विचार बाइबिल के विचार से मिलते जुलते हैं। उन्होंने 'सर्मन ऑन दी माउन्ट' की गीता से तुलना की और त्याग को धर्म का सर्वोत्कृश्ट रूप जानकर अत्यधिक प्रभावित हुए।1

गाँधी जी के लिये गीता तथा न्यू टेस्टामेन्ट दोनों ही भाा वत प्रेरणा के स्रोत थे। यद्यपि वे दोनों को समान महत्व नहीं देते थे। गाँधी जी ने एक बार कहा था हिन्दू धर्म से उनको पूर्ण आत्मिक भाांति मिलती है। उपनिशदों और गीता से जिस तरह की संतुश्टि होती है वह 'सर्मन ऑन दी माउन्ट' से नहीं प्राप्त होती है। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि गाँधी जी ने गीता तथा 'सर्मन ऑन द माउण्ट' में व्यापक अन्तर किया है। 'सर्मन ऑन दी माउन्ट' में जो बात बताई गयी है वही बात गीता में वैज्ञानिक फार्मूले के रूप में व्यक्त की गइ है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

गीता ने प्रेम के नियम को वैज्ञानिक दृश्टिकोण के रूप में प्रस्तुत किया। गाँधी ने लिखा है ''गीता तथा सर्मन के उपदे ाों में कोई संघर्श अथवा विरोधाभास नहीं है, वे दोनों ही एक कोमल एकता में समाहित हो जाते हैं।'' इससे भी यह लक्षित होता है कि गाँधी जी ईसाई धर्म से भी प्रभावित थे। दक्षिण अफ्रीका में वकालत प्रारम्भ करने के पश्चात् उन्हें अनेक महान ग्रन्थों के अवगाहन का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने उन अनेक प्रभावों का उल्लेख किया है, जो गाँधी जी के अहिंसा सम्बन्धी विचारों के सहायक रहे। ईसाई प्रभाव, हिन्दू धर्म का प्रभाव तथा गीता का प्रभाव गाँधी जी को अहिंसा की ओर ले गाया। शीयान ने लिखा है कि वृद्धावस्था में गीता से उन्हें अन्य सभी की तुलना में अधिक प्रेम हो गया और वे यीशु के उपदेशों को गीता के माध्यम से देखने लगे थे।6

गाँधी जी के चिन्तन पर अनेक पाश्चात्य विद्वानों की छाप दिखाई देती है। उन्होंने वि व की रचनाओं से विचार ग्रहण कर अपने चिन्तन को आगे बढ़ाया। उनके विचारों की यह समन्वयवादी विशेशता उनकी मौलिकता थी। विश्व के अनेक चिन्तकों की वैचारिक अभिव्यक्ति पर अपनी विश्लेशणात्मक विवेचना के कारण गाँधी जी स्वयं विश्व के अग्रणी विचारक बन गये।

टॉलस्टाय की प्रसिद्ध रचना The Kingdom of God is within you ने गाँधी जी को अत्यन्त प्रभावित किया। ऐसे समय जबकि दक्षिण अफ्रीका के ईसाइयों द्वारा भारतीयों की माँग पर कटाक्ष कर उनका विरोध किया जा रहा था, उस समय टॉलस्टाय के विचारों से गाँधी जी को सत्याग्रह संघर्श के लिये बल प्राप्त हुआ। कुछ ही वर्शों बाद गाँधी जी ने यह स्वीकार किया कि अहिंसा में उनकी निश्ठा उनकी पुस्तक से ही जागृत हुई थी। गाँधी जी के अनुसार टॉलस्टाय के जीवन से वे अत्यधिक प्रभावित इसलिए हुए क्योंकि उन्हें टॉलस्टाय के सिद्धान्त और व्यवहार में कोई अन्तर नहीं दिखाई देता। टॉलस्टाय ने सत्य के अनुगमन में सब वस्तुओं को गौण समझा। टॉलस्टाय ने ईसा की अमर वाणी की व्याख्या करते हुए राज्य की निन्दा की और भाासन के हिंसक ढाँचे को अस्वीकार किया। वे प्रेम के क्षेत्र को स्वीकार करते थे। गाँधी जी टॉलस्टाय के अहिंसा पर व्यक्त विचारों को अपने आदर्श माना। दोनों के बीच इस सम्बन्ध में पत्र व्यवहार भी हुआ।

गाँधी जी टॉलस्टाय की शाँति दार्शनिक अराजकतावादी कहे जा सकते हैं। उन्होंने औद्योगिकवाद का विरोध किया। उन्हें शारीरिक श्रम के प्राचीन एवं सरल तरीके पसन्द थे। ''मनुश्य की अन्तःकरण की क्रिया को जागृत कर ईश्वर से साक्षात्कार करना तथा आध्यात्मिक सत्ता से प्रेरणा प्राप्त कर लौकिक भाासन करना गाँधी जी को श्रेयस्कर प्रतीत हुआ।''

गाँधी जी थोरू की पुस्तक 'Essay on Civil Disobedience' से प्रभावित हुए। उनकी इस पुस्तक ने गाँधी जी क निश्क्रिय प्रतिरोध के विचार को संबल प्रदान किया। गाँधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में राज्य के नियमों की अवज्ञा का आन्दोलन चला रखा था। थोरू की पुस्तक दक्षिण अफ्रीका भारतीय सत्याग्रहियों के लिए मार्गद ार्क की तरह थी। अराजकतावाद तथा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता थोरू के विचार

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

गाँधी जी के लिए प्रेरणादायक सिद्ध हुए। किन्तु गाँधी ने सविनय अवज्ञा का विचार थोरू से ग्रहण नहीं किया था। अपने एक पत्र में गाँधी जी ने लिखा था कि जब उन्हें थोरू के अवज्ञा सम्बन्धी निबन्ध की प्रति प्राप्त हुई, तब तक दक्षिण अफ्रीका में सत्ता का विरोध काफी आगे पहुँच चुका था। थोरू के निबन्ध से 'सिविल डिसओबीडियेन्स' शब्द ग्रहण कर गाँधी ने उसे अंग्रेजी पाठकों तक पहुँचाने का काम किया और अपने आन्दोलन से परिचित कराया। बाद में उन्हें यह शब्द भी आन्दोलन के समुचित अर्थ को समझने में अपूर्ण दिखाई दिया। अतः उन्होंने 'सिविल रेजिस्टेन्स' शब्द का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया। यह भाब्द भी उन्हें अधूरा लगा तब उन्होंने गुजराती आन्दोलनकारियों के लिए 'सत्याग्रह' शब्द का सृजन किया। इस प्रकार थोरू का गाँधी जी पर प्रभाव परिलक्षित होता है।

गाँधी जी ने अपने अनेक विचारों को रस्किन के विचारों से ग्रहण किया। रस्किन की पुस्तक **'अन्टु दिस लास्ट'** से गाँधी जी ने यह सीखा कि सबकी भलाई में ही व्यक्ति की भलाई है। गाँधी जी ने रस्किन की पुस्तक का गुजराती में अनुवाद कर उसे 'सर्वोदय' नाम से प्रकाशित किया। रस्किन ने एक वकील के कार्य को एक नाई के कार्य के समान मूल्यवान मानते हुए यह व्यक्त किया कि सबको काम से जीविकोपार्जन का समान अधिकार प्राप्त है। रस्किन के इस विचार से ही गाँधी जी ने श्रम के मूल्य का विचार पहचाना। गाँधी जी रस्किन से इस कारण प्रभावित नहीं हुए थे कि वे उनके विचारों से सर्वथा अनभिज्ञ थे। उनके प्रभावित होने का कारण यह था कि स्वयं गाँधी जी के विचार रस्किन की रचना के माध्यम से उभरकर प्रतिबिम्बित हो रहे थे। लुई फिशर ने लिखा है कि इतना ही नहीं गाँधी जी ने रस्किन के विचारों को अपने शब्दों में व्यक्त नहीं किये, अपितु गाँधी जी के स्वयं के विचार रस्किन द्वारा व्यक्त थे।11 इस प्रकार रस्किन का गाँधी जी पर वैसा ही प्रभाव था जैसा अन्य अनेक विद्वानों का था।

गाँधी जी पर एमर्सन के निबन्धों का भी विशेश प्रभाव परिलक्षित होता है। गाँधी जी ने कहा था कि एमर्सन के निबन्धों में भारतीय ज्ञान पाश्चात्य गुरू के माध्यम से प्रकट हुआ था। वास्तव में यह कहना कि गाँधी जी पर पा चात्य प्रभाव हावी था, उचित नहीं है। मैं तो यह मानता हूँ कि जिन पाश्चात्य पुस्तकों में गाँधीवाद विचार परिलक्षित होते थे उनसे गाँधी जी ने अपने को प्रभावित मान लेते थे। पूर्ण पाश्चात्य प्रभाव जैसी कोई बात गाँधी जी के चिन्तन में स्पश्ट दिखाई नहीं देती है। राश्ट्रवाद का समर्थन करके छुआछूत एवं बाल विवाह को अस्वीकार करना आदि ऐसे विचार हैं कि जो पाश्चात्य प्रभाव एवं भारतीय परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं।

गाँधी जी पुरातनवादी थे। उनकी रचनाओं में आधुनिक सभ्यता के समस्त साधन जैसे रेल, डाक–तार, चिकित्सा पद्धति, शिक्षा एवं प्रेस आदि की आलोचना दिखाई देती है। अतः यह कहना उचित होगा कि उनका पुरातनवाद पाश्चात्य प्रभावों का प्रतिफल नहीं था। सादा जीवन, उच्च विचार

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आवश्यकताओं को सीमित करने का विचार तथा स्वैच्छिक त्याग की भावना आदि विचार भारतीय विचार एवं दर्शन से प्रेरित दिखाई पड़ते हैं।

इस भाोध पत्र का निश्कर्श निकालते हुए यह कहना उचित प्रतीत हो रहा है कि गाँधी जी के विचार किसी एक लेखक अथवा दार्शनिक से ग्रहण किये हुए नहीं थे चाहे गाँधी जी पर उनका कितना ही प्रभाव क्यों न दिखाई दे। वास्तव में, गाँधी जी ने विभिन्न स्रोतों से विचार ग्रहण कर उन्हें अपने विचारों के अनुरूप ढाल लिया। अपने विचारों और सिद्धान्तों को स्पश्ट करने तथा अपनी धारणाओं को लोगों तक पहुँचाने के लिए गाँधी जी ने न केवल विभिन्न धार्मिक पुस्तकों का अपितु टॉलस्टाय, थोरू, एमर्सन एवं रस्किन जैसे पाश्चात्य दार्शनिकों की रचनाओं का भी प्रभाव ाली उपयोग किया। अतः यह कहना उचित नहीं है कि गाँधी जी पूरी तरह पाश्चात्य दर्शन से प्रभावित थे।

संदर्भ–

गाँधी, महात्मा; Autobiography'' पृश्ठ–92

गाँधी, महात्मा; 'यंग इण्डिया' 6 अगस्त 1925।

गाँधी, महात्मा; 'यंग इण्डिया' 22 सितम्बर 1927।

विनसेन्ट शीयान, 'लीड काइन्डली लाइट' पृश्ठ

गाँधी, महात्मा, Autobiography'' पृ0108, 178 एवं 198

ए0आर0वडियार, The Philosophy of Gandhi'' मैसूर 1958

लुई; फिशर, Life of Mahatma Gandhi''

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies